अशोक सिंह
दुमका, झारखंड

बेटियाँ

घर की बोझ नहीं होती हैं बेटियाँ
बल्कि ढोती हैं घर का सारा बोझ

वे हैं तो
सलामत हैं आपके
कुर्ते के सारे बटन
बची है उसकी धवलता

उनके होने से ही
चलते हैं आपके हाथ
आपकी आँखें ढूंढ लेती हैं
अपनी गुम हो गयी कलम

घड़ी हो या छड़ी
चश्मा हो या अखबार
या कि किताबें कोट और जूते
सब कुछ होता है यथावत
बेतरतीव बिखरी नहीं होती हैं चीजें

वे होती हैं तो
मकड़ियाँ फैला नहीं पाती जाले
तस्वीरों पर जम नहीं पाती धूल
मुरझाते नहीं कभी गमले के फूल

उनके होने पर
समय से पहले ही आने लगती है
त्योहारों के आने की आहट

वे हैं तो
समय से मिल जाती है चाय
समय से दवाईयाँ
और तो और
समय पर
पहुँच पाते हैं आप दफ्तर
उनके होने से ही

उनके होने से ही
ताजा बनी रहती है घर की हवा
बचा रहता है मन का हरापन
और ‘घर ’ घर की तरह लगता है
उनके होने से ही !